an>

Title: Need to improve medical facilities in rural areas of the country particularly in Jalore Parliamentary Constituency, Rajasthan.

श्री देवजी एम. पटेल (जालौर): सभापति महोदया, मैं आज नियम 377 के अधीन सूचना के माध्यम से आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। सार्वजनिक प्राथमिक शिक्षा की तरह स्वास्थ्य सेवा की पहुंच तक देश की समूची आबादी को लाने की बात कुछ वर्षों से होती रही है लेकिन अभी तक इस दिशा में ठोस पहल नहीं हो सकी। दूसरी ओर स्वास्थ्य के मोर्चे पर स्थिति गंभीर दिखती है। देश के ग्रामीण क्षेत्र में डॉक्टरों की एक तिहाई सेवा ही गांवों में उपलब्ध है जबकि गांवों में देश की दो-तिहाई आबादी रहती है। अगर विशेषज्ञ डॉक्टरों की बात करें तो हालत और भी शोचनीय नजर आता है। लिहाज़ा, गंभीर रोगों के लिए गांवों के लोगों को शहरों की ओर रूख करना पड़ता है। कई मामलों में वहां जांच और इलाज़ की पर्याप्त सुविधा नहीं होती है। फिर भी राज्य की राजधानी के किसी बड़े सिविल अस्पताल या एम्स की ओर लोगों को भागना पड़ता है। गांवों या कस्बों में जो स्वास्थ्य केन्द्र हैं या अस्पताल में जिन डॉक्टरों की नियुक्ति होती है, उसमें से ज्यादातर डॉक्टर वहां न रहने का कोई न कोई बहाना निकाल कर वहां से भागने की कोशिश करते हैं। मैडम, गांवों में जांच की जरूरत के हिसाब से कोई उपकरण भी नहीं हैं। प्रशिक्षित चिकित्सा सहायकों का भी अभाव है। समूचा बुनियादी ढांचा ऐसा नहीं है जिस से कोई डॉक्टर निर्बाध तरीके से वहां अपनी सेवा दे सके। ऐसी स्थिति में सवाल यह है कि गांव का गरीब जो बीमारी और हादसों का शिकार होता है, वह अपनी ज़िंदगी से हाथ धो बैठता है। बहुत-से परिवारों को इलाज़ के लिए कर्ज़ लेना पड़ता है या अपनी ज़मीन-ज़ायदाद बेचनी पड़ती है। आंकड़ों के लिहाज़ से भी शहरी भारत के हिस्सों में देश के दो-तिहाई डॉक्टर हैं पर वहां भी तमाम गरीबों के लिए इलाज़ करवाना मुश्किल बना हुआ है। मेरे संसदीय क्षेत्र जालोर सिरोही के ग्रामीण क्षे के साथ-साथ शहरों में भी डॉक्टरों की भारी कमी है। जालौर सिरोही जिला स्थित सायला, सियाणा, जसवंतपुरा, हाडेचा, पिंडवाड़ा, रेवधर में विशेषज्ञों की कमी के कारण परिवार नियोजन की कोई सुविधा नहीं है। दोनों जिलों के चिकित्सालयों में रेडियोलॉजिस्ट, चर्म रोग विशेषज्ञ, मनोरोग, दंत विशेषज्ञों के पद रिक्त पड़े हुए हैं। दोनों जिले में ट्रॉमा सेन्टर हैं। मशीनें आई हुई हैं लेकिन डॉक्टरों के अभाव में उन मशीनों का जो लाभ मरीज़ों को मिलना चाहिए, वह नहीं मिल रहा है।ाॎडम, मैं आपके माध्यम से आपसे निवेदन भी करना चाहूंगा कि स्वास्थ्य के मामले में सरकार द्वारा आवंटन बढ़ाया जाए। सार्वजनिक चिकित्सा व्यवस्था को दुरूस्त करने के लिए कोई न कोई रास्ता निकाला जाए।

माननीय सभापति : जो लिखा है, उसकी बात करें।

श्री देवजी एम. पटेल : मैडम, वही पढ़ा है। एकाध शब्द को आगे-पीछे करना पड़ता है।